पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के विशेष संदर्भ में यज्ञ समग्र उपचार प्रक्रिया : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

ओरियन्टल स्टडीज में पी० एच० डी० उपाधि हेतु

Synopsis

निर्देशक

डॉ० प्रणव पण्डया

सह निर्देशक

डॉ० विनोद उपाध्याय

शोधार्थी

वन्दना श्रीवास्तव

देव संस्कृति विश्वविद्यालय गायत्रीकुँज-शांतिकुँज

हरिद्वार-२४९४११

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
1- शोध अध्ययन का महत्व (Significance of Research Study)	03
2- साहित्यिक सर्वेक्षण (Literature Review)	06
3- शोध की समस्या (Problem of Research)	09
4- शोध समस्या का औचित्य (Justification of Research Problem)	09
5- शोध के उद्देष्य (Objective of Research)	09
6- परिकल्पना (Hypothesis)	10
7- शोध विधि (Research Methodology-)	10
8- प्रस्तावित शोध कार्य की योजना (Planning of Proposed Research Work)	11
9- सहायक ग्रन्थ सूची (Bibliography)	12

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक युग में जहाँ भौतिक प्रगति का सूर्योदय अपनी चरम सीमा पर है वहीं मानव जीवन अशान्तयुक्त अव्यवस्थित एवं विकारग्रस्त हो गया समस्याएँ और रोग विकराल रूप से बढ़ते ही जा रहे हैं। Indian olive association एवं W.H.O. की रिपोर्ट के अनुसार 2015 तक भारत का सबसे बड़ा किलर हृदयरोग होगा। इस रिर्पोट के अनुसार वर्तमान में हृदय रोगियो की संख्या लगभग दस करोड़ है जिसमें 60% मरीज भारत में है। रिर्पोट में कहा गया है कि विश्व में भारत पहले न० पर है जो कुल आबादी का 10%हिस्सा है। U.S.और यूरोप दूसरे न० पर है जो कुल आबादी का 7 % है। चीन की कुल आबादी का 4 % है। 31 % अर्बन इण्डियन या तो ओवरवेट है या ओवियस है जो हृदय रोग में तीन गुना मदद करता है हाइपरस्ट्रेस और टेंशन 50% वृद्धि करता है । सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ने वाली व्याधि के रूप मे उभर कर सामने आ रहा है जिसमें 40 वर्ष की आयु से कम उम्र के व्यक्तियों में ज्यादा है। हर तीन में दो कर्मचारी स्ट्रेस से, 40 % शहरी भारतीय हाई लिपिड लेबल से जो कि हृदय रोग का प्रमुख कारण है। इसका कारण हमारी अस्त-व्यस्त जीवन शैली है जिन्हें लाइफ स्टाईल डिसआर्डर के नाम से जाना जाता है।यह तो मात्र एक रोग का औसत है।

वर्तमान में जितनी भौतिक सुविधाओ की भरमार हुई है उतनी ही स्वास्थ्य की हानि हुई है व्यक्ति शारीरिक मानसिक सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से खिन्न है। ऐसा नही कि इस दिशा में प्रयास नहीं किये जा रहे परन्तु परिणाम बहुत कम है। इस समय 135 वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियां प्रचलन में है जो मुख्य धारा की चिकित्सा से अलग है और हर देश स्वास्थ्य की दिशा मे मेडिकल केयर हेतु इन्हें विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग में ला रहा है **अतः आवश्यकता आज ऐसी समग्र चिकित्सा पद्धति की है जो मानव का सम्पूर्ण रूप से समग्र उपचार कर सके अर्थात आस्थाओं का परिशोधन मानसिक विकारों का निराकरण एवं शरीरगत अव्यवस्थाओं का सुगढ़ता पूर्ण संयोजन।**

(वांङमय 26 यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया पेज.3-34)

यज्ञ को भारतीय संस्कृति का मूल माना गया है। प्राचीन काल से ही आत्म-साक्षात्कार से लेकर स्वर्ग सुख मन शुद्धि आत्मबल ऋद्धि-सिद्धि आदि के लिए यज्ञ ही सर्व श्रेष्ठ साधन रहा है। यज्ञ के द्वारा मनुष्य को अनेक आध्यात्मिक एवं भैतिक लाभ प्राप्त होते रहे हैं।

आचार्य श्री के अनुसार यज्ञ में आरोग्य वर्धक एवं रोग निवारक अदभुत गुंण है जहाँ यज्ञ होते है वहाँ सामूहिक रोगों में निश्चित रूप से कमी होती है। जल वायु का परिमार्जन एवं संशोधन होने से उनके रोग कारण दोष हट जाते है और आरोग्य वर्धक गुण बढ़ते है फलस्वरूप अनेक रोगों से जनता अपने आप मुक्त हो जाती है। **यज्ञ करना एक बड़ा अस्पताल खोलने के समान है** जिससे अगणित रोग ग्रस्तो तथा भविष्य में बीमार पड़ने वाले लोगों का इलाज उनके घर बैठे ही हो जाता है चिकित्सा में जो धन समय श्रम काम में हानि चिन्ता आदि कठिनाईयाँ होती है उससे अनेक लोग बच जाते है। **अतः यज्ञ करना अस्पताल खोलने से अधिक उपयोगी सिद्ध होता है**। यज्ञ के आरोग्य वर्धक एवं रोग निवारक गुणों का वर्णन करने वाले अनेको मंत्र वेदो मे भरे पडे हैं।

(अखण्ड ज्योति जन०-1954 पे०न०-18)

वैदिक साहित्य में यज्ञ को विभिन्न रूपों में वर्णित किया गया है।

'यज्ञो वै विष्णुः' (शतपथ ब्राह्मण 1|1|2|13)

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः | (ऋग्वेद 1|164|35)

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः |

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः|| (गीता 3|14)

सर्वं यज्ञमयं जगत्| (कालिकाउपपुराण 31|40)

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः|

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ|| (गीता 3|11)

डा०प्रणव पण्डया जी के अनुसार यज्ञ समग्र स्वास्थ्य की कुंजी है। यज्ञ पदार्थ और चेतना का सम्मिलित रूप है। प्रकृति की शक्तियों को बढ़ाने के लिए यज्ञ अनिवार्य है। यज्ञ देवताओं का भोजन है। आज चारों तरफ प्राणों का अभाव है इसलिए वातावरण को यज्ञ के माध्यम से प्रदूषण मुक्त करना **कलियुग का श्रेष्ठ कर्म** है। यज्ञ से समग्र स्वास्थ्य की प्राप्ति आसानी से हो सकती है। यज्ञ देवताओं को दिया गया भोजन है जो हमें हजार गुना होकर वापस मिल जाता हैं यज्ञ ही एक मात्र ऐसा श्रेष्ठ कार्य है जो परमार्थ पूर्ण है भाव पूर्वक

तन्मयता के साथ किया गया हर श्रेष्ठ कार्य यज्ञ है। यज्ञ हमारी जीवन शैली का हिस्सा होना चाहिए जिससे हम प्रकृति को टैक्स के रूप में दे सके जो हमें पूर्ण रूपेण सुरक्षा प्रदान करती है जहाँ से हम सभी कुछ लेते है क्योंकि प्रकृति की सुरक्षा अपनी सुरक्षा है।(21-09-09)

यज्ञीय वातावरण में बैठने मात्र से रोगी मनुष्य निरोग हो जाता है। **चरक संहिता** में लिखा है आरोग्य प्राप्त करने की इच्छा करने वाले को विधिवत हवन करना चाहिए जिन व्यक्तियों का मस्तिष्क दुर्बल है, मानसिक विकृतियों से घिरा हैं, स्मरण शक्ति कमजोर है, अनिद्रा आदि विकार है, ऐसे मनुष्य को नित्य यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ करने वाले स्त्री पुरूष बलवान बुद्धिमान दीर्घजीवी एवं सुन्दर होते है इसलिए गीता आदि शास्त्रों में यज्ञ को आवश्यक धर्मकृत्य कहा गया है, आरोग्य वृद्धि एवं रोग-निवारण के लिए इस तरह के जो यज्ञ किए जाते हैं। उन्हें भैषज्य यज्ञ कहते हैं।

भारतीय दार्शनिक ग्रंथों में यज्ञ द्वारा रोग निवारण के लिए यज्ञ में प्रयुक्त भिन्न-भिन्न औषधियों के प्रयोग का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा रोग निवारण शास्त्रसम्मत है। वेदों मे इसका वर्णन मिलता है कि प्राचीनकाल में किसी भयंकर रोग का प्रकोप होने पर बड़े-बड़े यज्ञ सम्पन्न किये जाते थे, जो आरोग्यवर्धक सिद्ध होते थे।

आयुर्वेद में महर्षि चरक,सुश्रुत , महर्षि काश्यप ,वागभट्ट आदि सभी ने औषधीय धूमनस्य, धूपन, धूमपान, हवन एवं औषधीय यज्ञ का वर्णन किया है।

अर्थववेद में कहा गया है कि-

यदि क्षितायुर्यादि व परेती यदि मृत्योरन्तिकं नीत एवं।
त्मा हामि निर्ऋतेरूपज्ञथादस्पार्शमेनं शतशारदाय ।। अथर्ववेद 3/11।।

अर्थात यदि व्यक्ति की आयु क्षीण हो गई हो, जीवनी शक्ति समाप्त हो गई हो और वह मरणासन्न की स्थिति में हो, तो भी यज्ञ चिकित्सा के माध्यम से वह रोगों के चंगुल से छूट जाता है और सौ वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त करता है।

आचार्य श्री ने यज्ञ को समग्र उपचार प्रक्रिया कहा है क्योंकि यज्ञ ही एक मात्र श्रेष्ठ कर्म है जो पुरूषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति वातावरण संतुलन, प्राण पर्जन्य की वर्षा रोग कारक जीवाणुओं का शमन, स्वास्थ्य संवर्धन एवं समग्र स्वास्थ्य प्रदान करने की अद्भुत क्षमता रखता है।

साहित्यिक सर्वेक्षण (Review of Litrature)

(1) **सक्सेना सुनील कुमार** (1994) **"यज्ञ विज्ञान : अनुसंधानात्मक अध्ययन"**

इस शोध अध्ययन के अनुसार यज्ञ के द्वारा स्नायु संस्थान मजबूत होता है। यज्ञ के द्वारा औषधियों को वायुभूत करके उनके गुणों को अत्यधिक सूक्ष्म एवं प्रभावशाली बनाकर अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है। यज्ञ की वायु जहाँ रोग निवारक है वहीं निरोधक भी है। यज्ञीय वायु में सभी प्रकार के रोगों के निवारण की अपूर्व क्षमता है। हवन सामग्री के साथ-साथ दिव्य वेदमंत्रों के प्रभावशाली कम्पन, शरीर एवं मस्तिष्क के मर्मस्थलों को छूते और प्रभावित करते है, अतः मनोदैहिक रोगों के निवारण में बहुत प्रभाव पड़ता है।

(2) गायकवाड़ मधुकर पी० (1995) "Agnihotra the message of time"

ने सेल्वा मूर्ति के अध्ययन पर प्रकाश डाला है। डा० सेल्वा मूर्ति ने विशिष्ट प्रकार के अग्निहोत्र में मंत्रों के न्यूरोसाइकोलॉजिकल प्रभावों को अध्ययन किया। यह अग्निहोत्र प्रतिदिन सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय किया जाता था। इस प्रयोग में में 8 स्वस्थ पुरूषों को शामिल किया गया। इन्हें लगातर दो दिनों तक दो प्रकार का अग्निहोत्र करवाया गया।

प्रथम दिन अग्निहोत्र के दौरान ठीक मंत्र की जगह अप्रसंगिक पदों का उच्चारण किया गया। दूसरे दिन ठीक मंत्र के उच्चारण के साथ अग्निहोत्र सम्पन्न किया गया। दोनों ही दिन फिजियोलाजिकल पैरामीटर का मापन किया गया परिणाम में देखा गया कि प्रथम दिन के अग्नि होत्र में मस्तिष्क की तरंगों में किसी प्रकार का परिर्वतन नहीं था, परंतु दूसरे दिन ठीक मंत्र के साथ अग्नि होत्र के कारण सार्थक परिर्वतन प्राप्त किये गये भलीभांति अग्निहोत्र के दौरान जी. एस. आर. सार्थक रूप से उच्च पाया गया, अल्फा तरंगों भी वृद्धि पाई गयी।

(3) जोशी आर० आर० (1999) "The Integrated Science of Yajna"

इस अध्ययन के अनुसार आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी, जीवन सुविधाओं के स्तर को लगातार उन्नत बना रही हैं, जो कि जीवन सुविधाओं की महत्वपूर्ण उपलब्धि है परंतु प्रदूषण और तनाव भी हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन गये है जो हमारी खुशियों के लिये चुनौती के रूप में आ रही हैं। अब सभी यह महसूस करने लगे है कि केवल वैज्ञानिक और तकनीकी विकास ही हमारे जीवन को,खुशगवार नहीं बना सकते। वातावरण में उत्पन्न प्रदूषण एवं पारिस्थितिकीय असतुंलन और अस्थिरता की वजह से तनाव, चिंता के अलावा हर रोज नयी समस्याए हमारे चारों तरफ हर पल बढ़ती ही जा रहीं हैं । इसने हमें हमारी जीवन शैली हमारे चितंन और स्वास्थ्य प्रबंधन कें तरीकों को फिर से बदलने के लिये मजबूर किया है। इस सब के समाधान के रूप में प्राचीन भारतीय विज्ञान की यज्ञीय विधा ही सर्वथा हमारे लिए उचित एवं अनूकूल है क्योंकि यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है और आस पास के वातावरण के शुद्ध एवं परिवर्तित होने के कारण अवसाद, दुःख, चिंता आदि मनोभाव समाप्त होते हैं जिससे शारीरिक क्रियाएं अपने आप व्यवस्थित और सुचारू होने लगती हैं जो कि आरोग्य का मूल कारण हैं।

(4) गीरा टी अटलीवाला (2004) "Yajna and Environment"

इन्होने इस अध्ययन में यह कहा कि यज्ञ ही संसार का उत्पत्तिकर्ता है यज्ञ की अग्नि में जो भी पदार्थ डाला जाता है वह जलकर शाक्तिशाली ऊर्जा उत्पन्न करता है जो कि पदार्थ की गुणवत्ता के अनुसार अपना प्रभाव उत्पन्न करता है। प्रभाव या तो लाभ दायक होता है या फिर हानिकारक। इस प्रकार यज्ञ में विशेष प्रकार की औषधियों का प्रयोग कर पोषण प्रदान करने वाला धूम्र उत्पन्न कर वातावरण को रोगाणुओं से मुक्त किया जा सकता है।

यज्ञ के संबंध में यजुर्वेद में स्पष्ट निर्देश है कि यज्ञ द्वारा जल एवं वायु को शुद्ध किया जा सकता है। यज्ञ के द्वारा वर्षा का जल शुद्ध हो जाता है, जिसका उपयोग कृषि और वनौषधियों के लिए किया जा सकता है, जो कि पशुओं एवं मनुष्यों के द्वारा उपयोग में लाये जाते है इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ द्वारा शारीरिक एवं मानसिक रूप से शुद्ध हो जाता है।

(5) कुमार.एस टी एन (2004) "Mental Health by Vedic prudence"

इस अध्ययन के द्वारा वर्तमान मे हमारा समाज अनेक प्रकार की शारीरिक मानसिक एवं मनोदैहिक बीमारियों से ग्रस्त है इसका कारण वैज्ञानिक विकास की वजह से व्यक्ति की जीवन शैली की गति का अस्त-व्यस्त तरीके से बढ़ना है । विज्ञान के क्षेत्र में चारो ओर पर्याप्त विकास हुआ है। जिससे व्यक्ति को भौतिक स्तर पर केवल शारीरिक आराम ही (सुख-सुविधायें ही) प्राप्त हुआ है। परन्तु मनोचिकित्सा एवं मनोरोगों के क्षेत्र में मन के रहस्यों को भौतिक धरातल पर जानने के लिए आधुनिक तकनीक विकसित की गई है। किन्तु मानसिक शांति प्राप्त करने में आंशिक सफलता ही मिल पायी है। इसका एक मात्र उपाय ज्ञान के अथाह सागर वेदो में और वैदिक वाङ्मय में ही वर्णित है। वेदों द्वारा प्रदान की गई जीवन धारा को अपनानें में ही उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हो सकती है।

(6) पाठक कमल कान्त (2004) "Purification of environment by Agnihotra"

इस अध्ययन के अनुसार वातावरण का प्रदूषण इस समय संसार की सबसे घातक और गंभीर समस्या है भूमि जल वायु, सभी पूर्णरूपेण प्रदूषित हैं जिनकी वजह से मनुष्य अनेक प्रकार की घातक शारीरिक और मानसिक बीमारियों से पीड़ित है। भारतीय ऋषियों ने वातावरण की सुरक्षा, के लिऐ अग्निहोत्र की विधि विकसित की थी इसके तहत सुंगधित द्रव्यों को अग्नि में जलाया जाता था। जिसके फलस्वरूप उत्पन्न धूम्र वातावरण प्रदूषण को नियंत्रित करता है। आज यह सिद्ध किया जा चुका है कि गाय के गोबर,घी एवं दूध के द्वारा यज्ञ करने से रेडियो एक्टिविटी को नियंत्रित किया जा सकता है। अग्निहोत्र से उत्पन्न धूम्र,दुर्गन्ध एवं बैक्टीरिया को समाप्त करने में, रोगों को

दूर करने में, पौधों की वृद्धि में बहुत ही उपयोगी हैं। मंत्र अग्निहोत्र की आत्मा है। ध्वनि को शतपथ ब्राह्मण में ब्रह्म कहा गया हैं। मंत्र के अर्न्तगत विशेष शब्दों का चयन, विशिष्ट संयोजन एवं गुंफन किया जाता हैं यज्ञाग्नि एवं मंत्र की ध्वनि का सम्मिलित प्रभाव , शारीरिक मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्रदान करता है।

(7) शर्मा रचना (2004) ने "The ritual of Yagna and Environmental approach"

अध्ययन किया इसके अर्न्तगत यज्ञ द्वारा वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया इनके अनुसार धरती के वातावरण को शुद्ध करने में यज्ञ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यज्ञ के इसी महत्व के कारण स्थूल स्तर पर मानव जीवन में इसके वैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्याकंन की आवश्यकता महसूस की जा रही हैं।

(8) रघुवंशी मीनाक्षी (2007) "Some investigation in to the chemical & Pharmaceutical aspect of Yaghyopathy :studies in pulmonary Tuberculosis" ने आयुर्वेदिक वनौषधियों का टी.बी. अर्थात क्षय रोग के मरीजों पर सफल परीक्षण किया। इस शोध कार्य का मूल उद्‌देश्य प्रचीन यज्ञ चिकित्सा के माध्यम से क्षय रोग निवारण था।

(9) सक्सेना ममता (2007) "Air Quality Modeling & Non-Conventional Solutions through Vedic Science for the Environmental Problems."ने यज्ञ का वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन किया जिसमे वातावरण प्रदूषण एवं उसके नियंत्रण मे यज्ञ के प्रभावों का अध्ययन किया । जिससे वातावरण प्रदूषण में लाभ देखा गया।

(10) शर्मा शालिनी (2009) "यज्ञ चिकित्सा द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

इन्होंने अपने शोध कार्य में मानसिक स्वास्थ्य,अवसाद एवं चिन्ता नामक तीन मनोवैज्ञानिक चरों का परीक्षण किया। परिणम मे उपरोक्त चरों के स्तर में उल्लेखनीय परिवर्तन सामने आए।

(11) शुक्ला प्रीती (2009) "यज्ञ चिकित्सा का मानसिक मंदता से ग्रस्त बच्चों की बुद्धि लब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

इन्होंने अपने शोध कार्य में मानसिक मंदता से ग्रस्त बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर यज्ञ द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया, जिसमें सार्थक परिणम प्राप्त हुए।

3. शोध की समस्या

(Problem of Research)

यज्ञ के वैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय स्वरूप का अध्ययन जिसके अन्तर्गत यज्ञ में निहित सृष्टि और समिष्टगत व्यावहारिक एवं प्रायोगिक पक्षों का प्रस्तुतीकरण यज्ञ में निहित समग्र स्वास्थ्य का स्वरूप तथा समग्र उपचार विधि का अवलोकन।

4.शोध समस्या का औचित्य

(Justification of Research Problem)

यज्ञ पर उपलब्ध साहित्य के गहन अवलोकन एवं शोध समस्या के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के विवेचन से इस शोध समस्या के पूर्णतया मौलिक व औचित्य पूर्ण होने की संभावना बनती है।इस पर किये जाने वाले अनुसंधान से स्वास्थ्य एवं चिकित्सा क्षेत्र में एक नूतन आयाम का उद्घाटन होगा।

5. शोध के उद्देष्य

(Objectives of Research)

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य इस तरह से हैं-

1-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार यज्ञ के दर्शन में निहित स्वास्थ्य रक्षक पक्ष का सार्वभौमिक विश्लेषण करना।

२-यज्ञ कर्मकाण्ड विधि में निहित सिद्धान्तों के वैज्ञानिक स्वरूप का विश्लेषण।

३-यज्ञ में निहित वैकल्पिक उपचार विधियों का स्पष्टीकरण करना।

6. परिकल्पना (Hypothesis)

आदिकाल से ही यज्ञ को श्रेष्ठ कार्य, प्राकृतिक संतुलन, पुरूषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति तथा जगत के कल्याण हेतु हमेशा से श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि वातावरण परिशोधन शांति,स्वास्थ्य संवर्धन,रोग निवारण एवं प्रत्येक सामाजिक और धार्मिक कार्यो में प्रमुखता प्रदान की गई है। इसी तथ्य के संदर्भ में आचार्य श्री ने यज्ञ को समग्र उपचार प्रक्रिया की संज्ञा प्रदान की है।प्रस्तुत शोध परिकल्पना को निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया गया है।

सामयिक परिस्थितियों के संदर्भ में यज्ञ के महत्व का मूल्य।

यज्ञ के सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक स्वरूप का विवेचन, यज्ञ विधान में निहित स्वास्थ्य परक बिंदुओं का विश्लेषण।

वैकल्पिक उपचार विधियों का प्रतिपादन,प्रस्तुतीकरण।

7. शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध कार्य का महत्वपूर्ण कार्य यज्ञ का विज्ञान एवं सिद्धांत के तथ्यों का निरूपण इसके लिए पं० श्रीराम शर्मा द्वारा सृजित साहित्य एवं वैदिक वाङ्मय में यज्ञ चिकित्सा सें संबंधित तथ्यों का संचयन।

वैदिक वाङ्मय में स्वास्थ्य एवं व्याधि उन्मूलनार्थ प्रयुक्त यज्ञ एवं वैकल्पिक उपचार विधियों का समीक्षात्मक विश्लेषण।

आयुर्वेद में स्वास्थ्य एवं रोग के संदर्भ में यज्ञ के चिकित्सकीय स्वरूप का अवलोकन एवं स्पष्टीकरण।यथा- चरक संहिता, सुश्रुत संहिता,भावप्रकाश,काश्यप संहिता आदि।

उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं का(अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर) संचयन एवं विवेचन किया जायेगा ।

इस प्रकार यह शोध कार्य इन तीन चरणों में पूर्ण किया जायेगा।यज्ञ में निहित वैकल्पिक उपचार विधियों अभिनव शोध अध्ययन के आवश्यकता को इंगित करता है। वर्तमान शोध अध्ययन इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

8. प्रस्तावित शोध कार्य की योजना
(Planning of Proposed Research Work)

अध्याय 1. विषय प्रवेश(भूमिका)

अध्याय 2. वैदिक वाङ्मय में यज्ञ दर्शन एवं सिद्धांत

इस अध्याय में वैदिक वाङ्मय में यज्ञ के विविध स्वरूपों का वर्णन किया जायेगा तथा यज्ञ की आवश्यकता एवं महत्व का प्रतिपादन किया जायेगा ।

अध्याय 3. भौतिक सृष्टि रचना एवं यज्ञ

इस अध्याय में सृष्टि का पंचभौतिक स्वरूप एवं संतुलन हेतु यज्ञ का क्रियात्मक स्वरूप तथा इन्द्रियों के माध्यम से विषयों का ग्रहण एवं यज्ञ कर्मकाण्ड में साक्षी भाव की उपयोगिता का उल्लेख किया जायेगा।

अध्याय 4. समग्र स्वास्थ्य एवं रोग

इस अध्याय में समग्र स्वास्थ्य एवं रोग तथा रोगोत्पादक भाव एवं रोगों का वर्गीकरण का प्रकाश डाला जायेगा।

अध्याय 5. यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया

इस अध्याय में, चिकित्सा के विविध आयाम तथा वैकल्पिक उपचार विधियों की आवश्यकता एवं महत्व तथा रोग निवारण में उनकी भूमिका एवं यज्ञोपचार प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जायेगा।

अध्याय 6. उपसंहार एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ

Refrences:

१. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८)'वाङमय-२५,यज्ञ का ज्ञान विज्ञान अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।

२. अचल डा० अयोध्या प्रसाद,(१९८६) कौमारभृत्य- प्रथम संस्करण, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन।

३. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८)'वाङमय-२६,यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।

४. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८) विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक- द्वितीय संस्करण.. अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।

५. आचार्य श्रीराम शर्मा,(२००१)' गायत्री महाविज्ञान,संयुक्त संस्करण अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।

६. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९६)'कर्मकाण्ड भास्कर, प्रकाशक एवं मुद्रक युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि मथुरा।

७. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८,२००६)' गायत्री महाविज्ञान, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।

८. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९०) गायत्री की चौबीस शिक्षाए,युग निर्माण योजना मथुरा।

९. आचार्य श्रीराम शर्मा,(..)गायत्री महामंत्र की अद्भुत सामर्थ्य, ...

१०. आचार्य श्रीराम शर्मा,(...)सरल और सर्वोपयोगी गायत्री हवन विधि, युग निर्माण योजना मथुरा।

११. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९४) ऋगवेद संहिता दृ

१२. आचार्य श्रीराम शर्मा,(२००६) अथर्ववेद संहिता-प्रथम एवं द्वितीय, युग निर्माण योजना मथुरा।

१३. आचार्य श्रीराम शर्मा,(२०१०) मानव प्रगति एवं पर्यावरण, युग निर्माण योजना मथुरा।

१४. आचार्य श्रीराम शर्मा,(२००६) गायत्री योग, युग निर्माण योजना मथुरा।

१५. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८) गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार वाङमय खण्ड-११, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।
१६. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८) गायत्री साधना का गुह्य विवेचन,वाङमय खण्ड-१०, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।
१७. आचार्य श्रीराम शर्मा,(१९९८) गायत्री महाविद्या का तत्व दर्शन-वाङमय खण्ड-०९, द्वितीय संस्करण अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।
१८. आचार्य श्रीराम शर्मा,अखण्डज्योति,जनवरी-१९५४,
जून-१९५४,अगस्त-१९८४अग९-१९९२,मार्च-१९९३,सितम्बर-१९९७,
सन्-२००१,२००४,२००५,२००६ अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा।
१९. ब्रह्मवर्चस यज्ञ चिकित्सा(२०१०),युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि मथुरा।
२०. भण्डारी चन्द्रराज 'विशारद' (२००६) वनौषधि चन्द्रोदय,चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी (प्रथम एवं द्वितीय)।
२१. चुनेकर कृष्णचन्द्र(२००४),भावप्रकाशनिघण्टुः चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी।
२२. दशोरा नन्दलाल(१९९९), एतरेयोपानिषद और तैत्तिरीयोपनिषद(सृष्टि रचना का क्रम) अनुवाद और व्याख्या रणधीर प्रकाशन हरिद्वार-प्रथम संस्करण।
२३. द्विवेदी डा० रमानाथ (१९८६ वि० सं०-२०४३) स्त्रीरोग विज्ञान, चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी।
२४. द्विवेदी डा० रमानाथ (वि० सं०-२०२९)भिषक कर्म सिद्धि, चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी
२५. द्विवेदी डा० रमानाथ (१९८६ वि० सं०-२०४३) प्रसूति विज्ञान, चौखम्भा भारती अकादमी वाराणसी
२६. परिव्राजक स्वामी ब्रह्ममुनि, अथर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र(१९७४) जन ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली।
२७. पण्डया प्रणव(२००५),आध्यात्मिक चिकित्सा एक समग्र उपचार पद्धति वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शान्तिकुन्ज,हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।
२८. पाण्डेय महावीर प्रसाद(१९८७) चिकित्सा तत्व दीपिका,शांति प्रकाशन करोल बाग नई दिल्ली।
२९. मिश्र सिद्धिनन्दन (२००७),भैषज्यरत्नावली चौखम्बा सुभारती प्रकाशन-वाराणसी।
३०. मिश्र डा० योगेश चन्द्र(२०६८ वि० सं०) पदार्थ विज्ञान, चौखंभा संस्कृत भवन चौक वाराणसी।
३१. मुण्डकोपनिषद(सं०-२०६१) गीताप्रेस गोरखपुर।

३२. वैद्य लालचन्द(१६६३)-अष्टांग हृदयम मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।

३३. विश्वकर्मा हीरालाल(१६८४)-अथर्व चिकित्सा विज्ञान चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

३४. गीताप्रेस गोरखपुर ७५ अंक(सं०-२०६२)-आरोग्य अंक

३५. गीताप्रेस गोरखपुर गीता दर्पण

३६. गीताप्रेस गोरखपुर श्रीमद्भगवद्गीता

३७. शर्मा हेमराज नेपालराजगुरूणा(२००६, वि०सं०-२०६३),काश्यपसंहिता,चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

३८. शास्त्री दिनेश चन्द्र-वैदिक यज्ञ सामग्री फार्मिलेशन लक्षण

३६. शास्त्री पं० राम गोपाल वैद्य(१६५६)-वेदों में आयुर्वेद, लाल महल आयु६ अनुसंधान ट्रस्ट दिल्ली।

४०. शास्त्री काशीनाथ,गोरखनाथ(१६७७,१६८७)-चरकसंहिता प्रथम एवं द्वितीय चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

४१. सुखदास स्वामीराम(२०६४..) गीता दर्पण,

४२. श्रीमाली, डॉ. मन्दाकिनी-प्रज्ञापुरूष का समग्र दर्शन,अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा,२००२

43. Josi Rajni R.(2010)The integrated science of yagna-

44. Pandya Pranav (2010), Applied Science of Yagya for Health and Environment.

45. Dheera Govind Das(1999)Effects of the Hare Krishna Mahamantra on stress depression and the three gunas,in April 2001issue (Vol. 62,no 2) of the Indian general of social work.

46. Gira T Ataliwala 2004, yagna and Environment. In the Sovenior of world Congress on vedic sciences published in the book main shruti vedic sciences.CSIR New Delhi.

47. Scientificspirituality.awgp.org

48. www.dsvv.org

49. www.indolive.org